B.A. (Hons) Part III
Philosophy - Paper VI

Topic - समाज दर्शन का स्वरूप

Dr. Sachidanand Prasad.
R.R.S. College, Mokama.

19 वी शताब्दी तक समाजशास्त्र के अन्तर्गत समाजदर्शन की समस्याओं का समाधान होता था, परन्तु 20 वी शताब्दी मे समाज दर्शन का क्षेत्र समाजशास्त्र से अलग हो गया। समाजदर्शन सामाजिक घटनाओं की समष्टि की दृष्टि से व्याख्या और उसका मूल्यांकन नैतिक एवं गहनतम मूल्यों के आधार पर करता है। यह समाज की आदर्श एकता की कल्पना करता है और इसी सामाजिक एकता के अनुसार मानव जीवन के विशेष रूपों की सार्थकता की व्याख्या करता है। सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का चरम लक्ष्य क्या है, उन का क्या महत्व है, समाज मे क्या आदर्श होना चाहिए, समाज के प्रति हमारे क्या कर्तव्य है इत्यादि के विषय मे समाज-दर्शन के द्वारा ही ज्ञान सम्भव है। इसप्रकार हमलोग यह कह सकते है कि समाज दर्शन मुख्यत: आदर्शों, लक्ष्यों या मूल्यों का और समाज विज्ञान की पूर्व मान्यताओं का अध्ययन है।

प्रसिद्ध विद्वान मैकेंजी ने कहा है कि दार्शनिक सिद्धांतों का सामाजिक समस्याओं पर आरोपण करना ही समाज दर्शन है। मानव समाज में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक इत्यादि अनेक समस्यायें होती है और दार्शनिक सिद्धांतों के द्वारा समाज दर्शन इन समस्याओं का समाधान ढूंढता है।

समाज दर्शन यह मानता है कि समाज व्यक्तियों से बना है इसलिए वैयक्तिक कर्मों के चरम लक्ष्य और सामाजिक लक्ष्यों में संघर्ष नहीं होना चाहिए। समाज के द्वारा ही मनुष्य नैतिक लक्ष्यों की सिद्धि करता है।

प्रत्येक समाज विज्ञान की अपनी-अपनी मान्यताएं होती है और उनकी विवेचना करना समाजदर्शन का लक्ष्य है। यह विभिन्न समाज-विज्ञानों के अध्ययनों को एकबद्ध करने का प्रयत्न करता है।

प्रत्येक समाज विज्ञान का अध्ययन करने की अपनी विधि होती है और वे विधियाँ कहाँ तक उपयुक्त है, इसका अध्ययन

भी समाजदर्शन मे होता है।
समाज परिवर्तनशील है। समाज दर्शन सामाजिक परिवर्तनों के कारणों की विवेचना करता है। इन परिवर्तनों के कारण समाज मे उन्नति होती है। सामाजिक उन्नति का क्या अर्थ है इसे निर्धारित करना भी समाज दर्शन की एक समस्या है।
सामाजिक नैतिकता की समस्याएँ समाज-दर्शन के क्षेत्र के अन्तर्गत है। सामाजिक अपराध, उसके लिए दण्ड का विधान आदि विषय समाज दर्शन के क्षेत्र मे है।
समाज दर्शन का संबंध उन सिद्धांतों से भी है जिनके कारण सामाजिक एकता बनती है। इसी प्रसंग मे सामाजिक प्रवृत्तियों, भाषा, धर्म इत्यादि का भी विचार किया जाता है।
इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि
(a) समाजदर्शन समाज विज्ञानों का समीक्षात्मक मूल्यांकन है।
(b) समाज दर्शन समाज विज्ञानों की व्याख्या करता है।
(c) समाजदर्शन सामाजिक संगठनों के आदर्शों का विवेचन करता है।
(d) समाज दर्शन समाज विज्ञान की विधियों की समीक्षा करता है।
(e) समाज दर्शन का प्रभाव मानव जीवन के हर क्षेत्र पर है।